

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

२७/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते। परमात्मा गुरुजी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपनी मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... सभी अपना मूलस्वरूप देखें... अपने मूलस्वरूप को स्पष्टता से देखने का प्रयास कीजिए... यह मूलस्वरूप आपका सत्य स्वरूप है... यह आप स्वयं को अनुभव कीजिए... अपने मूलस्वरूप का चमकता हुआ सितारा... अपने सिंहासन पर विराजमान है... देखिए आपसे लाइट और माइट फैल रही हैं... अति शुद्ध यह आपका मूलस्वरूप है... अनुभव कीजिए आपके इस स्वरूप का...

सभी अपनी इस अवस्था में सदा स्थित रहने का प्रयास कीजिए। हर कर्म में यह अवस्था रहनी आवश्यक है। कर्म भल आगे-पीछे हो जाएं पर इस अवस्था में सदा रहकर अपने कर्मों के ऊपर ध्यान देना। अपना हर कर्म चेक करना - कि क्या यह मुझ आत्मा द्वारा, मेरी मूलस्वरूप स्थिति में हुआ है। सुबह उठने से लेकर रात सोने तक, आप दिन भर आपके कर्मेंद्रियों द्वारा कितने सारे कर्म करते हो। हर घड़ी में, दिन भर में, हर एक घड़ी में माना हर २४ मिनट में, वह एक घड़ी पूरी होने के बाद आपको आपके कर्मों की चेकिंग करना जरूरी है। समय बीतता जाएगा, घड़ियां बीतती जाएंगी पर क्या हर घड़ी में आपके द्वारा जो-जो कर्म आपने किए, क्या उस कर्मों में आप आपके मूलस्वरूप स्थिति में थे? यह चेकिंग हर किसी को हर घड़ी के बाद करनी जरूरी है। फिर भल वह चेकिंग एक मिनट में हो, दो मिनट में हो या पाँच मिनट में हो। आपको सिर्फ आपका कर्म वेरीफाई करना है - कि हाँ, अभी एक घड़ी के लिए हमने शरीर को नाश्ता खिलाया, तो क्या उस समय हर निवाले में, हम आत्मा हमारे मूलस्वरूप में थे? हर कोई चेक करना, कितने निवालों में हम आत्मा हमारे मूलस्वरूप में उपस्थित थे। क्या निवाला शरीर को खिलाते समय आप आपकी लाइट को देख पा रहे थे? क्या आपको आपकी लाइट की स्मृति थी? जिस

निवाले में आपको आपके लाइट की स्मृति नहीं थी माना वह निवाला किसी और ने खाया। आपने आपके शरीर में किसी और को प्रवेश कराने की अनुमति दी, क्योंकि उस निवाले में आप आत्मा की लाइट ऑन नहीं थी। मूलस्वरूप माना सदैव आत्मा की लाइट ऑन रखना। आपको हर कर्म में देखना है कि मैं आत्मा मेरी लाइट को देख रही हूँ।

वह लाइट ही कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करा रही है। आपके स्थूल कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कैसे घटित होते हैं? यह प्रोसेस अति फास्ट लेवल पर, आत्मा के लेवल पर होती है, जो कि आप इसे समझ नहीं सकते। आत्मा के द्वारा कोई कर्म करने का संकल्प उठ जाता है, फिर मन के द्वारा वो विचारों में कनवर्ट होता है, बुद्धि के द्वारा उस कर्म के लिए निर्णय लिया जाता है, बुद्धि ने निर्णय देने के बाद संस्कार इमर्ज होते हैं, जिस कर्म को करने है - यह सारा अति स्पीड में, ऑटो लेवल पे होता है। जैसे संस्कार इमर्ज हो जाते हैं - मन-बुद्धि-संस्कार से यह ऊर्जा सभी गुण-शक्तियों को मिलती है, पाँच तत्वों में जाती है आत्मा के, और इन से सूक्ष्म शरीर में जाती है, और सूक्ष्म शरीर से वह कर्म करने की ऊर्जा स्थूल शरीर में आती है, सभी स्थूल कर्मेन्द्रियों में आती है, और आपके द्वारा स्थूल कर्मेन्द्रियों से कर्म घटित होता है। ऐसे नहीं है कि आपके स्थूल कर्मेन्द्रियां पहले कर्म करते हैं। यह सारी प्रोसेस अंदर से बाहर है।

इसलिए जब आत्मा अपनी मूलस्वरूप स्थिति में नहीं रहती, अपने सभी गुण स्वरूप अवस्था में नहीं रहती, तब बाहरी जो कर्म घटित होते हैं, वह कर्म विपरीत रूप से घटित हो जाते हैं। उन कर्मों में गलतियां हो जाती हैं। फिर उस गलती के बाद आत्मा को ही दुख लगता है। आत्मा रियलाइज़ करती है कि उस समय में हम उस अवस्था में नहीं थे जिसके कारण हमारे स्थूल कर्मेन्द्रियों में गलतियां हुईं। जो गलती बाहर हो जाती है, या जो गलत कर्म बाहर कर्मेन्द्रियों के द्वारा हो जाते हैं, या कोई भी विपरीत रूप से किसी के साथ व्यवहार हो जाता है, वह कोई भी कर्म किसी भी रूप से कभी भी रिवर्स नहीं होता, क्योंकि वो घटित हो चुका है। अभी आत्मा के ऊपर संपूर्ण निर्भर है कि आत्मा को उस कर्मों का संस्कार बनाना है, या वह विपरीत कर्म का संस्कार छोड़ना है।

अगर आत्मा ने दिल से स्वीकार किया कि यह गलत कर्म हुआ, यह ऐसे नहीं होना चाहिए था, हमें हमारे ऊपर अटेंशन रखना चाहिए था, हमें ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए था। जितना-जितना आत्मा सच्ची दिल से संकल्प उठाती जाएगी, उतना-उतना उसके संस्कारों में से वह विपरीत कर्मों की ऊर्जा हटती जाएगी। वह विपरीत कर्मों की ऊर्जा जो विपरीत संस्कारों के रूप में बन गई है, वह विपरीत संस्कार हटते जाएंगे। पर इसके लिए आत्मा को पहले रियलाइज़ करना होगा। हर कोई अपनी चेकिंग अवश्य करे। अभी भी मेरे कौन से संस्कार ऐसे हैं जिससे दूसरों को दुख मिल रहा है, अभी भी हमारे कौन से बोल ऐसे हैं जिससे दूसरों को दुख मिल रहा है, अभी भी हमारी दृष्टि किस प्रकार से है जिससे दूसरों को कष्ट हो रहा है - हर कोई अपने से चेक करे। जितना-जितना आत्मा अपने हर कर्म को, हर व्यवहार को रियलाइज़ करती जाएगी उतना-उतना विपरीत संस्कारों के रूप में जो ऊर्जा आत्मा के अंदर पड़ी है, वह मुक्त होती जाएगी। अलग से उसे मुक्ति देने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

जैसे छोटे बच्चे को कहा जाता है कि जो बिजली का सॉकेट है उसमें हाथ नहीं लगाना। उसको कितना भी समझाएं पर वो बार-बार वहीं चला जाता है। और अगर एक बार उसको अच्छा-खासा करंट लग गया, फिर वो बच्चा उस परिस्थिति से पूर्ण रूप से समझ लेता है कि मुझे वह नहीं करना है, आगे से मैं इसका ध्यान रखूंगा, मैं इससे दूर रहूंगा। उसी प्रकार से आपको आपके मन, बुद्धि, संस्कारों को देखना है। आप आत्मा साक्षी होके आपके मन को देखें - मन के अंदर किस प्रकार के विचार चल रहे हैं। और चेक करें कि क्या यह विचार जरूरी हैं, क्या यह विचार आत्म-कल्याण के हैं, क्या यह विचार आत्म-परिवर्तन के हैं? अगर नहीं हैं, आत्मा इसे रियलाइज़ करती है, तो आत्मा मालिक अपने मन मंत्री को ऑर्डर दे सकती है कि “हे मेरे मन, आप इस प्रकार से विचार चलाना बंद कर दो” और आत्मा संकल्प उठाए कि जो भी यह विपरीत संकल्प या विपरीत विचार चलाने वाली, जो कुछ भी अशुद्ध ऊर्जा मेरे मन के अंदर पड़ी है, वह पूर्ण रूप से मुक्त हो जाए। आपको, आप आत्मा को परमात्मा की याद में रहकर आपके मन की क्लीनिंग करनी होगी। उसी प्रकार से आप आत्मा साक्षी होके अपने बुद्धि की चेकिंग करना - कि किस प्रकार के बुद्धि विज्ञान दिखा रही है, क्या यह विज्ञान आत्म-कल्याण के हैं, आत्म-

परिवर्तन के हैं, या मुझ आत्मा को माया में भटकाने के हैं? आत्मा निर्णय ले, कि उसे यह विपरीत ऊर्जा, जो बुद्धि को विज्ञान दिखा रही है, उसे रखना है, या उसे मुक्त करना है। उसी प्रकार से आत्मा साक्षी होकर अपने हर एक संस्कार को देखे। सुबह उठने से लेकर रात सोने तक के, आपके अंदर जिस भी प्रकार के हर कर्म के संस्कार पड़े हैं – उठना-बैठना, बातें करना, चलना-फिरना, कर्म संबंध में आते व्यवहार करना, हर कर्मों में किस प्रकार की स्थिति रखना, हर प्रकार के कर्मों में किस प्रकार के संस्कार इमर्ज करना। आत्मा अपने हर कर्मों के हर संस्कार की चेकिंग करे – कि यह जो इस प्रकार से हम किसी से बात करते हैं, क्या यह बात करने का हमारा जो संस्कार है, क्या यह सही है? यह जो हम शरीर को भोजन खिलाते हैं, क्या यह शरीर को भोजन खिलाने के हमारा जो संस्कार बना है, क्या यह सही है? हम जो उठते हैं, शरीर को उठाते हैं, शरीर को बिठाते हैं, क्या यह संस्कार सही है? जब तक आत्मा साक्षी होके अपने संस्कारों को नहीं देखती, तब तक वह संस्कार परिवर्तन नहीं होंगे।

स्वयं को रियलाइज़ करना होगा। अपनी हर एक एक्टिविटी को, हर किसी को चेक करना चाहिए – क्या हमारा, हम आत्मा का, यह जो शरीर मिला है, उस शरीर का चेहरा, क्या सदा मुस्कुराता हुआ रहता है? क्या चेहरे पर सदा मुस्कान रहती है? चेहरे पर सदा मुस्कान रखना यह भी आत्मा का एक संस्कार है, दिव्य संस्कार है। चेहरे पर मुस्कान, वो भी दिल की मुस्कान कब आएगी? जब आप आत्मा आपके स्थिति में रहेंगे, तो अपने आप, आप खुशी में रहेंगे और वही खुशी आपके चेहरे पे सदा रहेगी। आपको लगता होगा कि हम अभी अगर कोई चिंता की परिस्थिति नहीं, पर हम यह परिस्थिति अपने चेहरे द्वारा किसी को भी नहीं दिखाएंगे, किन्तु यह कभी भी नहीं हो सकता। क्योंकि चिंता, परेशानी, स्ट्रेस यह एक ऊर्जा है, जो ऊर्जा आपके सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों में भी चली जाती है और वहाँ से ही वह स्थूल कर्मेन्द्रियों द्वारा प्रदर्शित होती है। आप आपका बाहरी चेहरा कितना भी छिपाने की कोशिश करें पर आपका शरीर का जो औरा होगा वह चिंता से भरा हुआ होगा, आपसे चिंता के ही वाइब्रेशन निकलती जाएंगे, भल आप चेहरे पर झूठी मुस्कान दिखा रहे हो।

इसलिए अगर आप सच में अपने अंदर परिवर्तन चाहते हो तो अपने संस्कारों के ऊपर काम करो और जब आपको आपके जीवन में अगर परमात्मा मिलते हैं, तो परमात्मा की उपस्थिति से ही, परमात्मा के ज्ञान से ही, परमात्मा की हर एक शिक्षाओं से ही, आपके हर एक संस्कारों में अपने आप परिवर्तन आता जाएगा। आपको करना नहीं पड़ेगा। यह परमात्मा जादू है क्योंकि परमात्मा की हर श्रीमत में आप आत्मा का कल्याण और परिवर्तन होता है। हर शिक्षा में, परमात्मा की हर आज्ञा में, आप आत्मा का परिवर्तन होता रहता है। पर संगम युग में हर आत्मा के पास अगर वह भाग्य हो कि वो परमात्मा के पास पहुँच जाए, पूर्ण रूप से परमात्मा का अगर कोई आत्मा बन जाए, उसकी हर श्रीमत पर, हर शिक्षाओं पर कोई आत्मा अगर चलती जाए, तो उसका संपूर्ण कल्याण और संपूर्ण परिवर्तन होने बिगर नहीं रह सकता। इसलिए सभी आत्माएं अपने से चेक करें - कि क्या सच में आप आत्मा के पास उतनी ताकत बची है कि आप आत्मा, परमात्मा से शक्ति लेकर, आप अपने को पूर्ण रूप से परिवर्तित कर पाएंगी, या आप अपने से परिवर्तित हो पाएंगी? या सच में आप आत्मा को लगता है कि परमात्मा ही आप आत्मा को परिवर्तित कर सकता है, परमात्मा की हर श्रीमत, हर आज्ञा आप आत्मा को परिवर्तित कर सकती है - हर कोई आत्मा अपने से चेक करे। संगम युग में आते-आते आत्मा इतनी अति तमोप्रधान हो जाती है, कि उसको परिवर्तित करने के लिए उसका कल्याण करने के लिए, परमात्मा आते हैं।

और इस यूनिवर्स में, स्वयं सभी यूनिवर्स के, सभी के रचयिता परमात्मा आए हैं; जो कि हर संगम युग में कभी नहीं आते, जो इस संगम युग में आए हैं। और इस संगम युग में सिर्फ और सिर्फ इस ही संगम युग में हर आत्मा के पास, परमात्मा के पास पहुँच कर, अपना कल्पों-कल्पों की पूर्ण शुद्धि करने का पूर्ण मौका मिलता है। यह मौका सिर्फ अभी के इस कल्प के इस ही संगम युग में सभी के लिए है। क्योंकि परमात्मा ऐसे हर संगम पर नहीं आते। हर संगम पर उस यूनिवर्स के शिव बाबा आते हैं, आत्माओं को एक कल्प के लिए परिवर्तित करने, ज्ञान के द्वारा। पर इस संगम पे परमात्मा आए हैं, जो कि अपना कार्य कर रहे हैं। उसमें सभी आत्माओं को भी सौभाग्य मिला है कि वो भी अपना संपूर्ण कल्याण, संपूर्ण परिवर्तन साध सकते हैं। पर यह कब होगा? जब आत्माएं परमात्मा के पास पूर्ण रूप से समर्पित हो

जाएंगी। अगर कोई कॉलेज पढ़ाई पढ़ते हैं, एक होता है फुल टाइम कॉलेज अटेंड करना और एक होता है डिस्टेंस एजुकेशन लेना। इसमें कौन बन पाएंगे? जो फुल टाइम अटेंड करता है, कॉलेज को, हर क्लास को, हर लेक्चर को, हर प्रैक्टिकल को, हर थ्योरी को, वही अपना पढ़ाई में फुल मार्क्स ला पाएगा। उसी को वह पढ़ाई पूरी समझ आ पाएगी। बाकी जो भी डिस्टेंस एजुकेशन में पढ़ते हैं, उनको सिर्फ डिग्री मिलती है, उसमें किसी भी प्रकार से कोई प्राप्ति नहीं होती। और परमात्मा आपकी हर एक बात को - उसमें क्या सही है, क्या गलत है, उसको किस प्रकार से करना चाहिए, उसमें कैसे करना चाहिए, वह हर एक आपकी बात को परमात्मा करेक्ट करते हैं। फिर वो ज्ञान देकर, ज्ञान की समझ देकर, कभी शक्ति देकर, कभी महाकाल और रुद्र में शक्ति देकर, आपकी माया को निकालकर - पर परिवर्तन करते हैं। संगम युग में पहुँचते-पहुँचते आत्मा की माया इतनी तेज हुई है कि जो आत्मा को स्थिर बैठने नहीं दे पा रही है। इसलिए परमात्मा की शक्ति से, परमात्मा की ताकत से ही आत्मा परिवर्तित हो सकती है। हर कोई चेक करे - कि क्या आप आत्मा को आपका कल्पों-कल्पों का, हर प्रकार से आप आत्मा का आपको शुद्धिकरण करना है या बस अगले कल्प के लिए आपको आपका पार्ट ठीक रखना है। हर कल्प में संगम युग में उस यूनिवर्स के शिवबाबा आकर, अगले एक कल्प के लिए आत्माओं को परिवर्तन और कल्याण का मार्गदर्शन करते हैं। फिर जो आत्मा जितना उठाती जाएगी उतना वह अपना अगले कल्प का पार्ट रचती है; पर उसमें आत्मा की संपूर्ण शुद्धि नहीं हो सकती। और इस संगम में जो परमात्मा सभी के कल्याण के लिए आए हैं, उनके हर शिक्षाओं पर, हर श्रीमत पर चलकर जो आत्मा अपना संपूर्ण समर्पण करेगी, वही आत्मा का कल्पों-कल्पों का संपूर्ण रूप से शुद्धिकरण हो पाएगा। फिर आप आत्मा किसी भी कल्प में कभी भी बिगड़ नहीं सकती। हर कल्प में आपका सदैव श्रेष्ठ पार्ट ही रहेगा। क्योंकि परमात्मा जो परिवर्तन करते हैं, वो संपूर्ण रूप से, मूल रूप से परिवर्तन करते हैं; और यह परमात्मा की ताकत है और यह सिर्फ परमात्मा ही कर सकते हैं। इसलिए सभी आत्माएं जल्द से जल्द जागृत हो जाएं और अपने संपूर्ण शुद्धिकरण के लिए परमात्मा के पास आप आत्मा का संपूर्ण समर्पण करें; क्योंकि

ऐसा मौका कभी भी, किसी भी संगम में, कभी भी, किसी भी कल्प में नहीं मिलता। इसलिए सभी आत्माएं जागृत हो जाएं।

जितना-जितना आप आपके मूलस्वरूप का अभ्यास करोगे, दिल से आप संकल्प रखोगे कि आपको संपूर्ण परिवर्तन करना है, उतना-उतना आपके परिवर्तन के लिए, आपके परमात्मा के पास पहुँचने के लिए रास्ते खुलते जाएंगे। पर संकल्प आप आत्मा का होना जरूरी है क्योंकि आत्मा का दिल से उठा हुआ संकल्प, उसे कोई भी नहीं काट सकता। इसलिए सभी आत्माएं अपने कल्याण और परिवर्तन के बारे में गंभीरता में रहकर विचार करें कि इस संगम पर हमें क्या करना चाहिए और हम आत्मा क्या कर रहे हैं; क्योंकि समय तो बीतता जाना ही है और परमात्मा तो अपना कार्य पूरा करके ही रहेंगे। पर उतने समय में अगर कोई आत्माओं का भाग्य होगा तो वह परमात्मा से बन पाएंगे, वह अपना संपूर्ण परिवर्तन कर पाएंगे। इसलिए सभी आत्माएं जागृत हो जाएं।

अब तक संसार में बहुत संसार किया, अभी संसार से वैराग्य आना जरूरी है। क्योंकि वह संसार भी मायावी संसार हो गया है। आपकी ही माया के कारण आप आपके मायावी संसार में हो, इसलिए किसी को भी ब्लेम नहीं कर सकते हैं कि संसार ऐसा है, संसार वैसा है। सभी अच्छे हैं। आप आत्मा को निर्णय लेना है कि आपको क्या करना है। परमात्मा की श्रीमत अनुसार, आज्ञा अनुसार, शिक्षाओं अनुसार अपने को परिवर्तन करना है या मायावी संसार में रहना है। यह आत्म-कल्याण का समय चल रहा है। सभी आत्माएं जागृत हो जाएं। आज के दिन में सभी आत्माएं चेक करना - कि क्या आप अपने से पूर्ण रूप से परिवर्तित हो सकते हो, या आपको परमात्मा के पास आप आत्मा का समर्पण करना जरूरी है, आप आत्मा के संपूर्ण परिवर्तन के लिए।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः